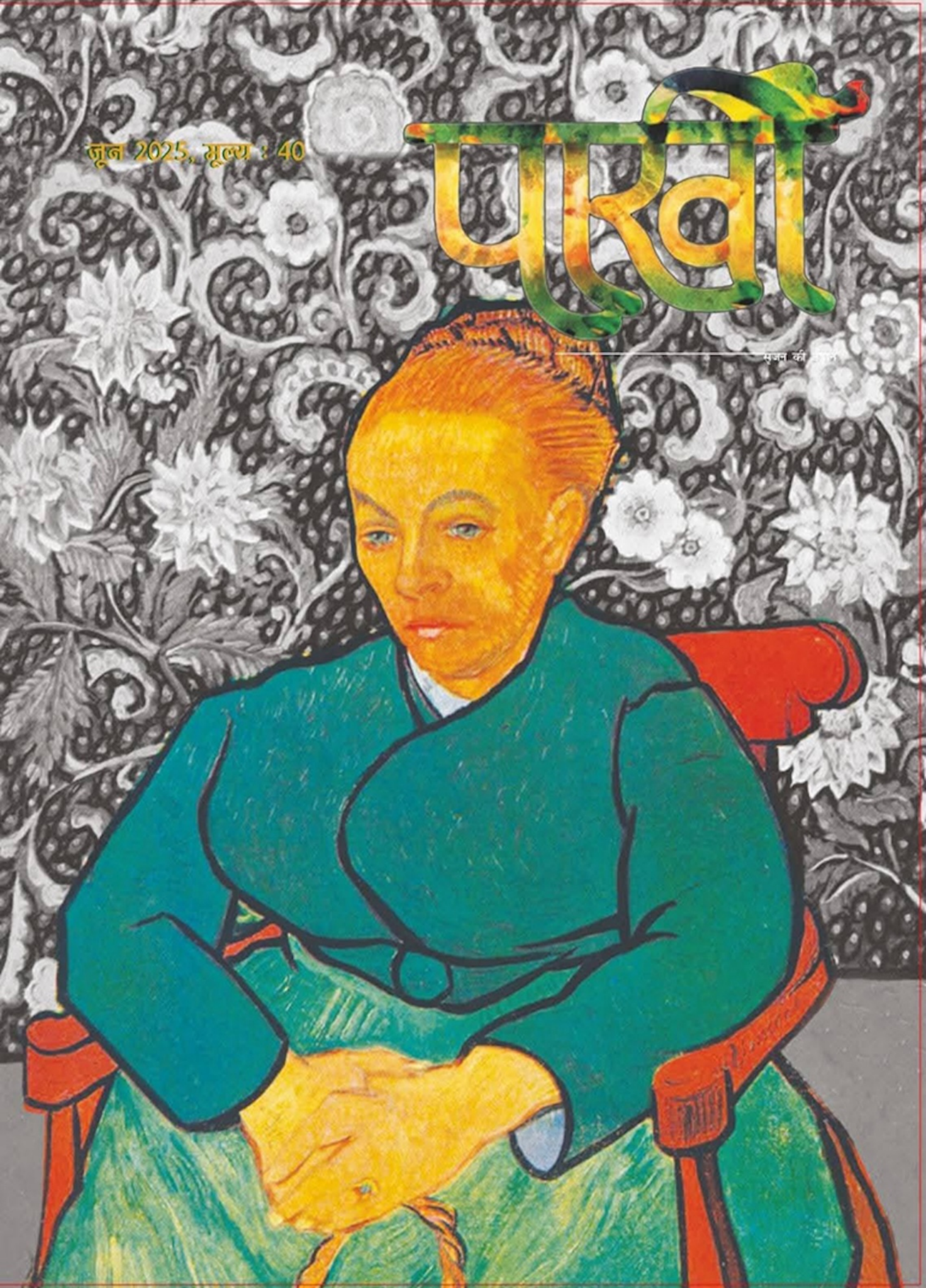

पाखी

सृजन की

जून 2025, मूल्य : 40

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

आवरण पृष्ठ : जनार्दन कुमार सिंह
रेखाचित्र : मार्टिन जॉन, निर्देश निधि, आस्था

वर्ष : 17, अंक 9, जून, 2025

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.com/pakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय। स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

आवरण चित्र विन्सेंट वैन गॉग की प्रसिद्ध पेंटिंग "La Berceuse" (1889), जिसमें उन्होंने ऑगस्टिन रूलेन को चित्रित किया है। इस चित्र में ऑगस्टिन एक कुर्सी पर बैठी हैं, उनके हाथ में एक डोरी है जो एक अदृश्य पालने से जुड़ी हुई है, जिससे वह अपने शिशु को झुला रही हैं। पृष्ठभूमि में जीवंत पुष्पों का पैटर्न है, जो चित्र को और भी जीवंत बनाता है।

यह पेंटिंग वैन गॉग ने 1889 में फ्रांस के आर्ल्स में बनाई थी और यह वर्तमान में नीदरलैंड्स के क्रोलर-म्यूलर म्यूजियम में संग्रहित है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

अंधभक्ति, छद्म राष्ट्रवाद और नारी 4

कहानियां

रुक्मा की सांस रुक गई : सुनीता 6
अ-संगत : रजनी गुप्त 14
अखंड खंड-खंड : दीर्घ नारायण 21
कौन ठगवा नगरिया लुटल बा : संदीप अवस्थी 28
बैरागी : अविरल कुमार 35
अंधेरे के रंग में डूबा पेंटर : संजय मनहरण सिंह 39
अकेली हूं...मैं : राजा सिंह 45
नंगा आदमी *(लघु कथा)*: महेश कुमार केशरी 69

कविताएं

पूनम शुक्ला की कविताएं 53
शैलेंद्र शैल की कविताएं 55
कौशल किशोर की कविताएं 57
खेमकरण 'सोमन' की कविताएं 59
विक्रम सिंह की कविताएं 61
गुड़िया तबस्सुम की कविताएं 63

मूल्यांकन

अस्तित्व की अनुभवजन्य सत्यता और आसक्ति के जीवन राग की कविताएं : प्रेम शशांक 65
हिंदी ग़ज़ल के नए मानक गढ़ती किताब : अविनाश भारती 68
व्यापक संदर्भों की ग़ज़ल : चंद्रभान सिंह यादव 70
समकालीन हिंदी कविता पर आलोचना का बहुवचनांत : बी.एल. आच्छा 73

सिनेमा

मीना कुमारी के अंदर कई और मीना कुमारियां छुपी हुई थीं : ख्वाजा अहमद अब्बास 76
अनुवाद : जाहिद खान और इशरत ग्वालियरी

लेख

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में श्याम बेनेगल की फिल्मों का चिंतन : पूरन चंद जोशी 80

स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन

हिंद स्वराज नहीं संसार स्वराज गांधीवाद नहीं गांधीधर्म : कृष्ण कल्पित 85

सत्याग्रह

इस युद्ध का मकसद क्या था? : प्रियदर्शन 88

कथा-मीमांसा

कलात्मक सब्र के कथाकार (मनोज रूपड़ा की कहानियां) : पंकज शर्मा 90

प्रति संसार

पॉडकास्ट और सरप्राइज प्रैंक की बढ़ती लोकप्रियता... : अर्पण कुमार 94

अंधभक्ति, छद्म राष्ट्रवाद और नारी

यूं तो हिंदी ने एक से बढ़कर एक साहित्यकार दिए हैं, ऐसे साहित्यकार जिन्होंने हिंदी को अपने लेखन से समृद्ध किया लेकिन ऐसे साहित्यकार बहुत कम हिंदी में हैं जिन्होंने साहित्य लेखन से इतर राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर खुलकर लिखा, तटस्थता से दूर रहे और इसके चलते न केवल सत्ता बल्कि साहित्यिक बिरादरी के भीतर भी खटकते रहे। ऐसों में पहला नाम है 'हंस' के संपादक रहे राजेंद्र यादव का। आज यह संपादकीय लिखते समय मुझे राजेंद्र जी बहुत याद आ रहे हैं। कारण मध्य प्रदेश के एक मूर्ख और बददिमाग मंत्री हैं जिन्होंने भारतीय सेना की एक काबिल महिला अधिकारी को 'आतंकवादियों की बहन' कह अनजाने में ही सही उस सच को सामने लाने का काम कर दिखाया जो नारी को देवी का रूप कहने वाले समाज का काला सच है। राजेंद्र यादव ने इसी मानसिकता पर सबसे पहले सवाल उठाए। उन्होंने स्त्री विमर्श को साहित्य की मुख्य धारा में लाने का कार्य किया। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा था कि 'धर्म और पितृसत्ता का गठजोड़ ही स्त्री की सबसे बड़ी शत्रु शक्ति है।'

उनकी पुस्तक 'खंड-खंड पाखंड' और संपादकीय संग्रह 'मेरी तेरी उसकी बात' में बार-बार यह चेतावनी दी गई कि यदि समाज धर्म और राजनीति के नाम पर नारी को नियंत्रित करने की कोशिश करेगा, तो वह न सभ्य रहेगा, न नैतिक। भारत में नारी को सदैव 'देवी' का दर्जा दिया गया है–'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता:' जैसी ऋचाएं हमें यह विश्वास दिलाती हैं कि स्त्री का स्थान सर्वोपरि है। लेकिन यदि हम भारतीय सामाजिक इतिहास और वर्तमान की वास्तविकता को देखें, तो यह चित्रण एक महज आदर्शवाद प्रतीत होता है। वास्तविकता यह है कि नारी का शोषण, उत्पीड़न और उसके आत्म-सम्मान का हनन इस सभ्यता में लंबे समय से चला आ रहा है। आधुनिक भारत में यह शोषण एक नए और कहीं अधिक खतरनाक रूप में उभर कर सामने आया है–अंधभक्ति और धर्म के नाम पर नारी की स्वतंत्रता पर हमला।

वेदों और उपनिषदों में नारी को विद्वता, आध्यात्मिकता और सम्मान का प्रतीक बताया गया। गार्गी, मैत्रेयी, घोषा और अपाला जैसी ऋषिकाओं ने बौद्धिक चर्चा में भाग लिया और धर्म चर्चा को समृद्ध किया। लेकिन वहीं दूसरी ओर, मनुस्मृति जैसे ग्रंथों में यह भी कहा गया कि स्त्री को पिता, पति और पुत्र के संरक्षण में रहना चाहिए–'न स्त्री स्वातंर्त्यमर्हति।' महाभारत की सभा में द्रौपदी के वस्त्रहरण से लेकर रामायण में सीता की अग्नि परीक्षा तक–यह विरोधाभास हमारे सांस्कृतिक मानस का स्थायी हिस्सा रहा है, जिसमें एक ओर देवी का सम्मान है और दूसरी ओर उसकी मानवीय गरिमा का अपमान।

भारतीय संविधान ने नारी को वह अधिकार दिए जो प्राचीन ग्रंथों और परंपराओं में अक्सर उनसे छीन लिए जाते थे। अनुच्छेद 14 समानता का अधिकार देता है, अनुच्छेद 15 किसी भी प्रकार के भेदभाव से संरक्षण देता है, और अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी देता है। परंतु व्यवहार में यह अधिकार कितने प्रभावी हैं यह सवाल आज भी कायम है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नारी शक्ति ने जिस तरह से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, वह भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, अरुणा आसफ अली, सरोजिनी नायडू, दुर्गा भाभी, कमला नेहरू, इन महिलाओं ने न केवल ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी, बल्कि उस पुरुषवादी मानसिकता को भी झटका दिया जो महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित करना चाहता था।

भारतीय मीडिया और सिनेमा ने लंबे समय तक नारी को या तो देवी के रूप में या भोग्या के रूप में दिखाया। फिल्मों में 'त्यागमयी मां', 'दबी-कुचली पत्नी' और 'आकर्षक प्रेमिका' के स्टीरियोटाइप चरित्रों ने यह तय किया कि समाज में एक आदर्श स्त्री कैसी होनी चाहिए। जब कोई स्त्री इन तयशुदा छवियों से हटकर सोचती है, तो उसे समाज की अस्वीकार्यता का सामना करना पड़ता है।

21वीं सदी में जब भारत वैश्विक मंच पर खुद को एक प्रगतिशील और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करता है, तब यह देखना दुखद है कि यहां अंधभक्ति, झूठे राष्ट्रवाद और धर्म के नाम पर नारी को अपमानित किया जा रहा है। पहलगाम आतंकी हमले में शहीद हुए लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की पत्नी हिमांशी नरवाल को केवल इसलिए ट्रोल किया गया क्योंकि उसने युद्धोन्माद के विरुद्ध एक भावनात्मक प्रतिक्रिया दी। एक पत्नी जिसने अपने पति को खोया, उसे देशद्रोही कहकर ट्रोल किया गया, उसकी छवियां वायरल की गईं और चरित्र पर कीचड़ उछाला गया। यह समाज की वह मानसिकता है जो स्त्री को 'देवी' तभी मानता है जब वह चुपचाप पीड़ा

वेदों और उपनिषदों में नारी को विद्वता, आध्यात्मिकता और सम्मान का प्रतीक बताया गया। गार्गी, मैत्रेयी, घोषा और अपाला जैसी ऋषिकाओं ने बौद्धिक चर्चा में भाग लिया और धर्म चर्चा को समृद्ध किया। लेकिन वहीं दूसरी ओर, मनुस्मृति जैसे ग्रंथों में यह भी कहा गया कि स्त्री को पिता, पति और पुत्र के संरक्षण में रहना चाहिए–'न स्त्री स्वातंर्त्यमर्हति।' महाभारत की सभा में द्रौपदी के वस्त्रहरण से लेकर रामायण में सीता की अग्नि परीक्षा तक–यह विरोधाभास हमारे सांस्कृतिक मानस का स्थायी हिस्सा रहा है, जिसमें एक ओर देवी का सम्मान है और दूसरी ओर उसकी मानवीय गरिमा का अपमान।

सहती रहे, विरोध न करे।

'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान भारतीय सेना की प्रवक्ता के रूप में कर्नल सोफिया जब मीडिया को जानकारी दे रही थीं, तब उनकी योग्यता और भूमिका को दरकिनार कर उनकी वेशभूषा और पहचान पर घिनौने कमेंट किए गए। मध्य प्रदेश के एक मंत्री ने तो सार्वजनिक मंच से यह कह दिया कि 'जिन्होंने हमारी बेटियों के सिंदूर उजाड़े, उन कटे-पिटे लोगों को हमने उनकी बहन भेजकर उनकी ऐसी तैसी करवाई। आतंकियों ने हिंदुओं को कपड़े उतार कर मारा और मोदी जी ने उन्हीं की बहन को उनकी ऐसी तैसी करने उनके घर भेजा।' यह सिर्फ एक महिला अधिकारी का अपमान नहीं था, यह उस संस्था का भी अपमान था जो देश की रक्षा करती है।

सोशल मीडिया आज अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम है, लेकिन वही अब सबसे घातक हथियार भी बन गया है। अंधभक्ति, राष्ट्रवाद और धर्म के नाम पर चलने वाली ट्रोल आर्मी नारी स्वतंत्रता की सबसे बड़ी दुश्मन बन चुकी है। कोई भी स्त्री यदि सरकार या सेना की नीति पर सवाल उठाती है, तो उसे 'देशद्रोही', 'इस्लाम समर्थक', या 'नक्सल समर्थक' करार दे दिया जाता है।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी अब बढ़ रही है, लेकिन व्यावहारिक रूप से आज भी संसद और विधानसभाओं में उन्हें अक्सर 'टोकन प्रतिनिधि' मानकर उपेक्षित किया जाता है। महिला आरक्षण विधेयक वर्षों तक लटकाया गया, और जब पास हुआ, तब भी उसे लागू करने की तिथि अनिश्चित रखी गई। महिला नेताओं को अक्सर उनकी शारीरिक छवि, वेशभूषा या व्यक्तिगत जीवन के आधार पर निशाना बनाया जाता है, न कि उनके विचारों पर। मणिपुर में महिलाओं के साथ हुई भयावह घटनाएं–सार्वजनिक निर्वस्त्र घुमाना, यौन हिंसा–यह दर्शाता है कि स्त्री की गरिमा आज भी राजनीति और जातीय हिंसा की बलि चढ़ती है। इसी प्रकार बिलकिस बानो केस में दोषियों की रिहाई और उनका सार्वजनिक सम्मान यह प्रश्न उठाता है कि क्या स्त्री न्याय की भी राजनीतिक शर्तों पर पात्र है?

2012 की निर्भया घटना ने देश को हिला दिया था, लेकिन उसके बाद भी बलात्कार की घटनाएं रुकी नहीं। देश में हर दिन औसतन 80 से अधिक बलात्कार होते हैं, और उनमें से बहुत कम को न्याय मिलता है। क्या यह वही समाज है जो 'देवी' की पूजा करता है?

भारतीय सेना सदैव धर्मनिरपेक्ष और समर्पित संस्था रही है। लेकिन हाल के वर्षों में राजनीति ने फौज के नाम का दुरुपयोग शुरू किया है। जब सेना की कोई महिला प्रवक्ता अपनी ड्यूटी कर रही होती है, तो उस पर घटिया व्यक्तिगत हमले करना इस प्रवृत्ति का विस्तार है। और जब युद्ध के बाद एक फौजी की पत्नी अपने दर्द को साझा करती है, तो उसे गद्दार घोषित करना राष्ट्र के नैतिक पतन का उदाहरण है।

भारत को यदि सचमुच एक सशक्त राष्ट्र बनाना है, तो उसे स्त्री को देवी नहीं–एक संपूर्ण मनुष्य मानना होगा। देवी का दर्जा देकर उसे चुप रहने को मजबूर करना, और सवाल उठाने पर उसे कलंकित करना–यह पाखंड अब ज्यादा नहीं चलेगा। धर्म, राजनीति और सोशल मीडिया की तिकड़ी जिस प्रकार से नारी स्वतंत्रता को कुचलने पर आमादा है, उस पर केवल कानून नहीं, समाज की चेतना और संस्कृति का भी हस्तक्षेप जरूरी है। राजेंद्र यादव का कहा याद आ रहा है कि 'स्त्री को हमने देह के अलावा कुछ नहीं समझा है। शुरू से लेकर आज तक। हमारे संस्कृत साहित्य को ही ले लें। 'नायिका भेद' हो या वात्स्यायन का 'कामसूत्र', उसमें नायिका के रंग रूप का नख से लेकर शिख तक का ही चित्रण मिलता है। हमने स्त्री को बता दिया है कि वह शरीर के अलावा कुछ नहीं।'

राजेंद्र यादव ने जो चेतावनियां वर्षों पहले दी थीं, आज वे भविष्यवाणी के रूप में सच हो रही हैं। अब प्रश्न यह है: क्या हम इस चेतावनी को गंभीरता से लेंगे, या अंधभक्ति के गर्त में स्त्री की गरिमा को और गहरे दफन कर देंगे?

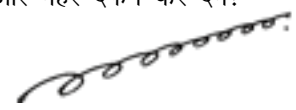

रुक्मा की सांस रुक गई

■ सुनीता

'दादी! देर रात तक जागने से आंखें खराब हो जाती हैं। अब आपकी उम्र हो गई है। आप जाकर सो जाइए, इधर हम देख लेंगे।' दादी की नकल करती प्रथा कुर्सी हिलाते, नाखून साफ करते, अपनी धुन में खोई-खोई बोलती है।

'हां! तऽ अब तू हमारऽ दादी जिन बनाऽ। आजकल के बच्चे भी न जरा-सा कद निकलते ही बड़ों का स्थान लेने लगते हैं।' रुक्मा चिढ़कर मुख फेर लेती है।

मनुहार में 'अरे, दादी...!' कहकर प्रथा पीठ पर लगभग झूल जाती है। और दादी हैं कि झरझरा देती हैं।

'दूर्र... हमारऽ कमरऽ टेढ़िआ जाई। तोके ना पता है न हमारऽ चिर युवा दादी अम्मा...!' मंद मुस्कान संग हौले से कपोल को दुलार देती है। जिसे प्रथा तुरंत सहलाकर झाड़कर गाल बराबर कर, चुपचाप मुंह बनाकर किनारे खड़ी हो जाती है। जबकि रुक्मा देह सीधी करती-'ओह! मेरी युवा दादी तुम तो बुरा मान गईं। अब आज ये भी जान लो कि एक दिन बूढ़ा वृक्ष, ढलती उम्र का ढपली बन जाता है।'

'ओईई... मेरी प्यारी दादी! दुनिया टेक्नोलॉजी में तेजी से एडवांस हो रही है और आप हो कि घिसे रिकार्डर की तरह बजती रहती हैं...।' दनदनाती कुर्सी पर लौट जाती है। तनिक तुनक मिजाज प्रथा को रुक्मा लाड़ से निहारती अपनी धड़कन टटोलती है।

दादी-पोती की नोक-झोंक में धड़कते आसमान, पहाड़ के होंठ पर औंधे लेट गए। उबासी लेती धरती बेसाख्त तड़पी। समुंदर से भी गहरा-गाढ़ा दिल एकदम से धड़का। नीले रंग से परे लाल रंग में पोशिदा चमकीला दिल खूबसूरती का राज हवाओं के गाल पर उगे डिंपल में दुनिया को कैद कर लेता है। दफ्न चाहतों के असंख्य साज, सुरों की लय पर थिरकती धुनों की मीठी याद को दर्ज करती रुक्मा स्नेहसिक्त बारिश में भीग जाती है। 'पृथ्वी की हद से भी बड़ी दिल की अनहद नाद है।' धड़कनों में शाया ख्वाब कभी हंसाते हैं तो कभी रुलाते हैं। तभी यादों के धुंध गहराने लगे। धुंध की लकीरें रात के सीने पर सिर रखकर बेहोश होने ही वाली थीं कि नई आफत ने दस्तक दी...।

'हलो! हलो...!' गुमनामी ने टेरना शुरू किया।

'मेरी प्रिये! कहां हो...?'

'मैं हाजिर हूं...'

'इस वक्त आवाज कहां से आ रही है?' बेड के पुश्त से टेक लगाते, आंखों पर चश्मा चढ़ाती, हाथ आगे बढ़ाकर उजालाकर वक्त देखते ही

सुनीता

कला, साहित्य, आलोचना एवं सोलो वुमन ट्रेवलिंग में सतत सक्रिय।
पत्र-पत्रिकाओं, बेव जर्नल एवं संयुक्त संग्रहों में कविता, कहानी, आलोचना तथा तत्कालीन मुद्दों पर लेखन-प्रकाशन। 'सियोल से सरयू' कहानी संग्रह चर्चित तथा प्रशंसित। एक अन्य पुस्तक 'शोषण में हिस्सेदारी' स्त्री के प्रति समाज के नजरिए का वैश्विक की बजाय गंवई व महानगरीय दृष्टिकोण का सम्यक् विश्लेषण। 'सूरज प्रकाश मारवाह' साहित्य रत्न पुरस्कार, 'राहुल सांस्कृत्यायन' सम्मान, 'सावित्री बाई फुले यायावरी' राष्ट्रीय सम्मान, 'काका साहेब कालेलकर' राष्ट्रीय सम्मान और 'थाई-भारत गौरव' सम्मान, 'बैंकाक' 2023 से सम्मानित।

संपर्क:
drsunita82@gmail.com